वार्षिक रिपोर्ट
1998-99

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद)

डाकघर : न्यू फॉरेस्ट, देहरादून–248006

वार्षिक रिपोर्ट
1998-99

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
डाकघर : न्यू फॉरेस्ट, देहरादून-248006

विषय वस्तु

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	1
2.	भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां	5
3.	1998-99 के दौरान प्रमुख उपलब्धियों का सारांश	7
4.	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून	21
5.	वन आनुवांशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर	59
6.	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलौर	95
7.	उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर	123
8.	वर्षा एवं नम पर्णपाती वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट	153
9.	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	173
10.	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला	207
11.	वन उत्पादकता संस्थान, रांची	219
12.	सामाजिक वानिकी एवं पारि-पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद	225
13.	वानिकी अनुसंधान एवं संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा	231
14.	वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद	237
15.	वानिकी विस्तार	239
16.	वानिकी शिक्षा	247
17.	वानिकी सांख्यिकी	251
18.	विदेशों से सहायता-प्राप्त परियोजनायें	255
19.	परीक्षित वार्षिक लेखा	269

प्राक्कथन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् वानिकी प्राथमिकता अनुसंधान कार्यक्रम की योजना बनाने और उसे शुरू करने तथा अन्त्य उपभोक्ताओं में अनुसंधान परिणामों एवं विकसित प्रौद्योगिकियों का विस्तार करने के लिए राष्ट्रीय एवं राज्य संस्थानों की क्षमता को मजबूत बना रही है। यह शैक्षिक संस्थाओं में वानिकी शिक्षा की प्रणाली को सुधारने में भी जुटी है।

अनुसंधान कार्यक्रम सहायता के अन्तर्गत भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने अनुसंधान की गुणवत्तां बढ़ाने के लिए अपनी अवसंरचना में सुधार किया है। पुस्तकालय एवं सूचना तंत्र के आधुनिकीकरण ने साहित्य में सहज पहुंच को उपलब्ध कराया है, जिससे अनुसंधान की गुणवत्ता के सुधार में सहायता मिली है। नीति विश्लेषण, योजना प्रक्रिया में सहायता देने के लिए, परिषद् में सृजित सांख्यिकीय सेंवाओं ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में नीति निर्माताओं और राज्य वन विभागों के सहयोग से रिपोर्ट प्रकाशित की हैं।

स्कूल और कालेज में शामिल करने के लिए पाठयक्रम और सामग्री का विकास शुरू किया गया है, जिसमें वन संसाधनों के सतत् उपयोग के महत्व पर जोर दिया गया है। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों को 184 लाख रूपयें की वित्तीय सहायता दी गई है। परिषद् के अधीन सम- विश्वविद्यालयों ने 1998-99 के दौरान अन्तिम रूप से 45 लोगों को पीएच. डी. की डिग्री प्रदान की है।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा वानिकी विस्तार रणनीति विकसित की जा रही है। विस्तार सहायता निधि के अन्तर्गत परीक्षित प्रौद्योगिकियों से संबन्धित 23 परियोजनायें स्वीकृत की गई तथा 5 सैटेलाइट प्रौद्योगिकी प्रदर्शन विस्तार केन्द्र स्थापित किए गए। सभी राज्य वन विभागों तथा 25 निजी संगठनों के साथ अनुसंधान विस्तार सहानुबन्ध स्थापित किए गए।

पर्याप्त सामग्री जैसे विवरणिका, बुलेटिन, वार्षिक रिपोर्ट, पुस्तकें, मोनोग्राफ, पुस्तिकाएं एवं वीडियों फिल्में तैयार की गई तथा जन जागरूकता कार्यक्रम के एक भाग के रूप में इनका प्रभावी रूप से प्रसार किया गया। परिषद् ने वेब पेज शुरू किया है और यह विश्वभर में http ://www.icfre.up.nic.in पर देखा जा सकता है। होम पेज का व्यापक रूप से उपयोग हो रहा है। अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों के सन्दर्भो के लिए अनेक क्रास-लिंक उपलब्ध कराए गए हैं।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने इस स्पष्ट धारणा के साथ नयी सहस्राब्दि में प्रवेश कर लिया है कि वनों और उनके कुशलपूर्ण प्रबन्धन, उपयोग और संरक्षण के बारे में क्या ज्ञात है तथा अभी क्या ज्ञात करने की आवश्यकता है ताकि वनों में एवं इसकें निकटवर्ती गाँवों में निवास कर रही वंचित जनता के जीवन की दशाओं में सुधार लाया जा सके।

मुझे इस परिषद् का नेतृत्व करने का सौभाग्य एवं हर्ष प्राप्त हुआ है। मुख्यालय तथा क्षेत्रीय संस्थानों के अधिकारी एवं कर्मचारी परिषद् को अनवरत समर्पित एवं सच्ची सेवा प्रदान कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि अब भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् को वानिकी अनुसंधान में और वन नीति प्रक्रियाओं में एक शीर्ष संगठन के रूप में व्यापक सम्मान प्राप्त है जो पूर्णतः परिषद् के सभी सदस्यों के प्रयासों के कारण हैं हम वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के क्षेत्र में उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए वचनबद्ध हैं।

(आर०पी०एस० कटवाल)
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
देहरादून